एक प्रयास

शौर्य काबरा

सारणी

बजट की आदत.....03-09

चक्रवृद्धि का कमाल.....10-15

बैंक की सेवाएँ.....16-18

रुपये में गिरावट.....19-24

कर्ज़ का सबक.....25-31

संपत्ति को विभिन्नता से बाँटना.....32-36

उत्तर कुंजी.....37-39

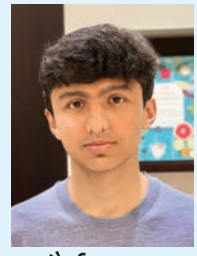

शौर्य काबरा

एक लड़का, एक मिशन पर !

शौर्य १६ साल का एक युवक है जो परिपक्वता, वैश्विक–दृष्टि और जीवन संबंधी अपने नज़रिए के मामले में अपनी उम्र से काफी आगे है. वे अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी सहजता और स्वाभाविकता से निभाते हैंऔर इससे उनकी एक अलग ही कहानी सामने आती है.

शौर्य काबरा उपलब्धि के लिए आसान रास्ते अपनाने वालों में से नहीं हैं, और न ही वे बने–बनाए आम रास्तों पर चलते हैं. उनका दिल सोने का है, जो अपने उन देशवासियों के लिए रोता है, जो दमित और वंचित हैं. उन्होंने सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक मामलों में उल्लेखनीय स्पष्टता प्रदर्शित करते हुए इतनी कम उम्र में दो अद्भुत पहलें की हैं. वे वित्तीय साक्षरता की बुनियादी जानकारियों के साथ उन लोगों को सशक्त बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं.

वे कुछ ऐसी चीजों को लेकर बहुत भावुक हैं, जिनके लिए एक १६ साल का बच्चा लालायित रहता है – एक बास्केटबॉल और दूसरा गाना. लेकिन इसी के साथ एक टीनएजर के विपरीत, उन्हें व्यापार–व्यवसाय और आर्थिक मामलों की पेचीदगियाँ भी बड़ी प्रभावित करती हैं. ये कोई संयोग की बात नहीं है कि वे संख्याओं के जादूगर भी हैं. और इसलिए उस उम्र में, जब आज के टीनएजर ऑब्सेसिव डिवाइसों से घिरे रहते हैं, शौर्य ने अपना ध्यान अपने मिशन पर लगाया और उन्होंने दो पहलें की – एक, ''सिम्पली फिनटेक'' और दूसरी, ''एक प्रयास''. अपनी इन दोनों पहलों के माध्यम से वे कोशिश कर रहे हैं कि इस क्षेत्र में उनका अपना ज्ञान बढ़े, और साथ ही अन्य लोगों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए वित्तीय मामलों के विशेषज्ञों के ज्ञान और अनुभव का पूरा लाभ लिया जा सके. ''सिम्पलीफिनटेक'' एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है जो युवाओं को फिनटेक के बारे में परिचित और शिक्षित करता है और फिनटेक विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सत्रों के माध्यम से उनके लिए उस जटिल दुनिया को सरल, सहज और आसान बनाता है. ''एक प्रयास'' के माध्यम से शौर्य भारत के ग्रामिणों के बीच वित्तीय साक्षरता को बेहतर बनाना चाहते हैं. वित्तीय साक्षरता की पेशकश के माध्यम से इस प्लेटफ़ॉर्म का मक्सद वित्तीय जागरूकता बढ़ाना और वंचित ग्रामिणों को सशक्त बनाना है.

शौर्य काबरा एक खास मिशन पर हैं. अभी वे एक लड़के के अवतार में हैं. लेकिन उनकी आँखों में मौजूद और उनके दिल में उबलते जुनून से आने वाले समय की एक झलक मिलती है, और लगता है कि वो दिन दूर नहीं हैं,जब फ़िनटेक उनके अपने स्टार्ट–अप के रूप में साकार होगा.

बजट की आदत

(हरीश और गीता)

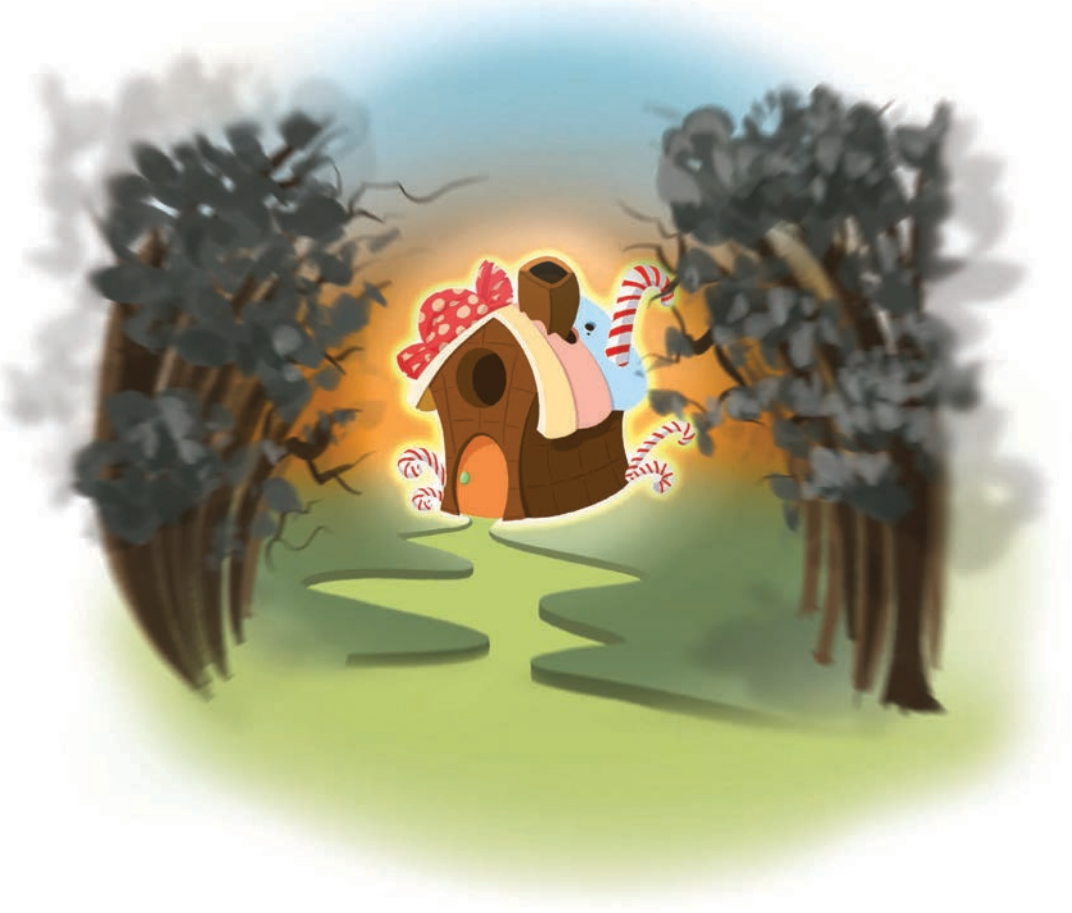

हरीश और गीता अपनी छुटियाँ बिताने एक ऐसी अनोखी जगह गए थे जहाँ बहुत सुन्दर मिठाइयों से बना घर था।

लेकिन अब वापस घर पहुँचने में उन्हें पूरे दस दिनों का समय लगना था।

इस पूरे सफ़र में उनके पास खाने के लिए सिर्फ 100 लड्डू थे।

जिसे उन्हें ऐसे बाँटना था कि वो पूरे 10 दिनों तक चलें।

हरीश होशियार था क्योंकि उसने उन सभी लड्डुओं का हिसाब रखा था जो अब तक वो खा चुका था। आगे भी उसे कोई परेशानी ना हो यह सोचकर उसने अपने द्वारा खाये जाने वाले लड्डुओं का हिसाब रखना शुरू कर दिया। इस हिसाब को अच्छी तरह रखने के लिए हरीश ने अपना एक बजट बनाया कि वह बदलते मौसम के अनुसार किस तरह अपनी रोज़ खाये जाने वाले लड्डुओं में कमी कर सकता है ताकि वह 100 लड्डू से पूरे 10 दिनों का समय आसानी से गुज़ार सके।

इसके लिए उसने एक सारणी बनायी और बदलते मौसम में वह कितनी लड्डू खा सकता है इसका हिसाब-किताब रखा।

लेकिन यह बजट उसे ज्यादा सही नही लगा, तो उसने एक और बजट बनाया।

दिन	मौसम	लड्डू
पहला दिन	ठीक ठाक मौसम	10 लड्डू
दूसरा दिन	खराब मौसम	15 लड्डू
तीसरा दिन	अच्छा मौसम	5 लड्डू
चौथा दिन	खराब मौसम	15 लड्डू
पाँचवां दिन	ठीक ठाक मौसम	10 लड्डू
छठा दिन	अच्छा मौसम	5 लड्डू
सातवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	12/13 लड्डू
आठवां दिन	खराब मौसम	15 लड्डू
नौवां दिन	अच्छा मौसम	5 लड्डू
दसवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	12/13 लड्डू

अपनी इस सारणी की मदद से हरीश ने हिसाब लगाया कि उसे पूरी सर्दियों में लगभग 103 से 105 लड्डुओं की ज़रूरत पड़ेगी। परन्तु उसके पास तो सिर्फ 100 लड्डू थे। तो उसे कोई ऐसा रास्ता निकालना था जिससे कि उसकी रोज़ लड्डू खाने की आदत में वह थोड़ी कमी ला सके।

हरीश ने रोज़ के हि साब से लड्डुओं को बाँटना शुरू कर दिया, उसे एहसास हुआ कि यदि वह खराब मौसम में एक ही जगह रहे और जब सही मौसम हो तभी आगे का सफ़र करे तो उसकी शक्ति कम खर्च होगी जिसकी वजह से उसका काम कम लड्डुओं में भी चल जायेगा तथा अन्य दिनों के मुकाबले, जब मौसम ख़राब होगा तब वह अपनी बचाये हुए लड्डुओं में से थोड़े ज्यादा लड्डू खाकर शक्ति प्राप्त कर सकता है।

दिन	मौसम	लड्डू
पहला दिन	ठीक ठाक मौसम	11 लड्डू
दूसरा दिन	खराब मौसम	12 लड्डू
तीसरा दिन	अच्छा मौसम	6 लड्डू
चौथा दिन	खराब मौसम	12 लड्डू
पाँचवां दिन	ठीक ठाक मौसम	11 लड्डू
छठा दिन	अच्छा मौसम	6 लड्डू
सातवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	11/12 लड्डू
आठवां दिन	खराब मौसम	11 लड्डू
नौवां दिन	अच्छा मौसम	6 लड्डू
दसवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	11/12 लड्डू

हरीश ने अपनी इस सारणी की मदद से जब गणना कि तब देखा कि उसे 99 से 101 लड्डू चाहिए। जिससे वह आगे बची हुई सर्दी में भी अपना सफ़र काट सके अगर वह इसे बहुत अच्छी तरह अमल करता है तो उसे सर्दी के इन 10 दिनों में (101+99)/2 यानी 100 लड्डू ही चाहिए, जितने उसके पास पहले से ही हैं।

वही दूसरी तरफ गीता ने अपने लड्डुओं को ढंग से नही बाँटा। इस तरह अपने पूरे 10 दिनों के सफ़र में बिना सोचे-समझे, गीता को अपने लड्डू गवाना महंगा पड़ा। वह उन्हें कब, कितनी बार, और कितनी मात्रा में, मौसम के अनुसार खा रही थी, ऐसा कोई भी हिसाब उसने नही रखा।

दिन	मौसम	लड्डू
पहला दिन	ठीक ठाक मौसम	11 लड्डू
दूसरा दिन	खराब मौसम	12 लड्डू
तीसरा दिन	अच्छा मौसम	11 लड्डू
चौथा दिन	खराब मौसम	10 लड्डू
पाँचवां दिन	ठीक ठाक मौसम	12 लड्डू
छठा दिन	अच्छा मौसम	10 लड्डू
सातवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	13 लड्डू
आठवां दिन	खराब मौसम	11 लड्डू
नौवां दिन	अच्छा मौसम	10 लड्डू
दसवां दिन	ठीक ठाक/खराब मौसम	0 लड्डू बचे

हरीश अपने लड्डू इसलिए ठीक से बचा पाया क्योंकि उसने अपने लड्डुओं को सही तरीके से बाँटा था परन्तु गीता ने ऐसा नही किया। जिसके कारण गीता के पास दसवें दिन खाने के लिए एक भी लड्डू नही बचा। यदि वह पहले से ही बजट बना लेती तो उसे परेशानी नही होती।

अतः हरीश ने अंत तक अपने लड्डुओं को बचाना सही समझा और हमें बचत का एक प्राथमिक तरीका बताया, जहाँ हम 1 दिन में कि तने लड्डू खा रहे हैं या एक दिन में कितना पैसा खर्च कर रहे है, उसकी तुलना हम हमारे कुल लड्डू या पैसे से करके एक बजट बना सकते हैं।

निचे दिए गए क्रॉसवर्ड को पूरा करें

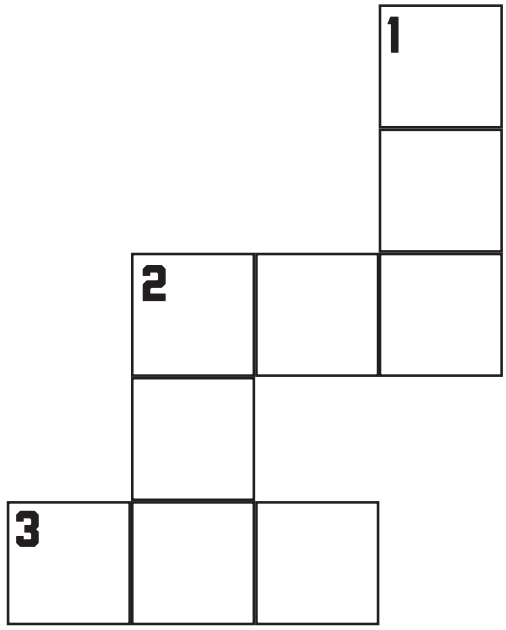

बाएं से दाएं

2. हरीष ने अंत तक अपने लड्डुओं को.....सही समझा।

3. हरीष नें रोज के हिसाब से लड्डुओं को.....शुरू कर दिया।

ऊपर से निचे

1. गीता को अपने लड्डू.....महंगा पड़ा।

2. हिसाब को अच्छी तरह रखने के लिए हरीष नें अपना एक.....बनाया।

चक्रवृद्धि का कमाल

जय एक गरीब घर का लड़का था, जो अपने परिवार के साथ एक छोटे से गाँव में रहता था। हर गरीब परिवार की तरह उसके परिवार में भी बस इसी बात की चिंता रहती थी कि कहीं से एक वक्त की रोटी का जुगाड़ हो जाए और घर का कोई भी सदस्य खाली पेट न सोये। हालांकि उनके पास नाम मात्र की ही रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ें थी, पर एक ऐसी चीज़ उनके पास थी जो उनके लिए बहुत कीमती थी व उनके परिवार की शान थी, उनकी पुष्टैनी गाय।

एक दिन जय अपनी गाय को चराने घास के मैदान में ले जा रहा था कि तभी उसने थोड़ी दूरी पर एक अजीब आकृति देखी। पर जैसे-जैसे वो पास आया तो उसे एहसास हुआ कि वह एक इंसान था। उसने एक भूरे रंग का चोगा पहना था,

एक हाथ में लम्बी छड़ी थी व अपने दूसरे हाथ से वह अपनी जेब में कुछ खोज रहा था। जय समझ नही पाया की वह इंसान क्या ढूंढ रहा था। जय ने तुरंत उसकी तरफ देखते हुए पूछा कि तुम कौन हो? उस अजनबी इंसान ने खुद को एक जादूगर बताया, उसने अपना नाम बताये बिना जय से सिर्फ ये कहा कि उसके पास जादुई फलियाँ है,

जो असीम ऊँचाई तक पहुँच कर आसमान भी छू सकती है। यह सुनते ही जय को आष्चर्य हुआ और उसने उन जादुई फलि यों को देखने की जिज्ञासा प्रकट की। उस अजनबी इंसान ने अपनी जेब से हाथ बाहर निकाल कर अपनी मुट्ठी खोलते हुए कहा,

"यह है पाँच जादुई फलियाँ।"

उसने तो अब यह ठान ही लिया था कि किसी भी तरह वह इन्हें लेकर ही रहेगा। तो उसने बिना समय गवाए, उस अजनबी से उन फलियों की कीमत पूछी। अजनबी इंसान ने तुरंत कहा,

इनकी कीमत तुम्हारी गाय है।

जय यह सुनते ही एक पल के लिए पीछे हट गया, लेकिन फिर उसने अपनी गाय को बेचने का फ़ैसला कर लिया और उस अजनबी से सौदा करके फलियों के बदले अपनी गाय दे दी।

जय तुरंत अपने घर आया और उसने उन फलियों को मिट्टी में बो दिया, उन्हें पानी दिया, और अपने पलंग पर आकर सो गया। अगले दिन सूरज के उगते ही वह फलियों को देखने के लिए जैसे ही बाहर आया तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नही हुआ, वह चमत्कार देखकर भौचक्का रह गया कि उसके सामने एक पाँच फुट लम्बा, फलों से लदा पेड़ खड़ा था। जि सकी हर शाखा पर फल ही फल थे।

वह जल्दी से सारे फलों को तोड़कर उन्हें बेचने के लिए बाज़ार चला गया। उन फलों को बेचकर उस कमाई से मिले धन से उसने खाद खरीदकर जहाँ पेड़ उगा था, वहाँ की मिट्टी में उसे अच्छी तरह मिला दिया। फिर अगले दिन सुबह जब जय ने पेड़ देखा तो यह देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि अब उस पेड़ पर बड़े आकार के, दुगुनी संख्या में फल उगे थे। उसने झटपट सारे फल तोड़े और फिर से उन्हें बेचकर जो पैसे मिले उससे खाद खरीदकर फिर उसे पेड़ वाली जगह की मिट्टी में अच्छी तरह मिला दिया। अगली सुबह फिर फल आकार और संख्या में चौगुने हो गए। इसी तरह जय अपनी कमाई को वापिस खाद खरीदने में निवेष करता रहा, जिसकी वजह से फल चौगुने से आठ गुना, फिर आठ गुना से सोलह गुना, और फिर सोलह गुना से बत्तीस गुना आकार और संख्या में तीव्रता से बढ़ते रहे।

आखिरकार पेड़ इतना विशाल होने के साथ फलों से भर गया कि अब जय आसानी से अपना बाकी का जीवन बिता सकता था। जिस तरह पेड़ को बढ़ाने और ज्यादा फल पाने के लिए खाद डाली गयी उसी तरह हमें भी अपनी कमाई को दुगना करने के लिए पुननिविष करना चाहिए, क्योंकि कमाई का कुछ हिस्सा निवेष करते रहने की यह प्रक्रिया हमे तीव्र गति से, लगातार व भरपूर लाभ यानी प्रति फल देती रहती है।

हालांकि इसकी बहुत कम संभावना है, पर फिर भी हम अगर यह मान कर चलें कि हमारे निवेष पर, हर दिन हमें 100% प्रतिफल (पुनः लाभ) प्राप्त होता है और अगर हमारा प्रारंभिक (शुरूआती) निवेष 1000 है, तो -

दिन	निवेश	लाभ + निवेश (पुननिविष)
1	1000	2000
2	2000	4000
3	4000	8000
4	16000	32000
5	64000	128000
6	256000	512000

छठे दिन आपका निवेष, आपके लगाए गए वास्तविक मूल्य से बढ़कर 512 गुना हो जायेगा, अतः पैसे से पैसा कमाने की यह प्रक्रिया हमें बताती है कि यदि हम अपनी कमाई के कुछ हिस्से का धन, अन्य जगह निवेष करने में लगाएँ, तब हम पुननिविष की क्षमता को बढ़ाकर ज्यादा फायदा कमा सकते हैं।

नाम

निचे दिए गए क्रॉसवर्ड को पूरा करें

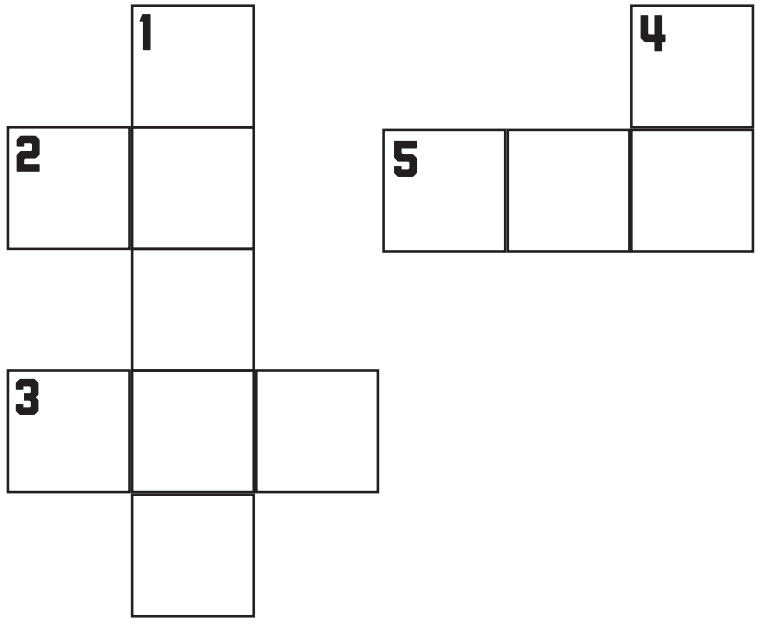

दाएं से बाएं

2. जय ने अपनी कमाई के हिस्से के.....से खाद खरीदी।

3. इसी तरह जय अपनी कमाई का वापिस खाद खरीदने में.....करता रहा।

3. हम पुननिविष की क्षमता को बढाकर ज्यादा.....कमा सकते है।

ऊपर से निचे

1. लाभ और निवेष की जोड़कर, उसे वापस निवेष करने की प्रक्रिया को.....कहा जाता है।

4. जय ने उस अजनबी से.....करके फलियों के बदले अपनी गाय दे दी।

बैंक की सेवाएँ

(भोलू सब्ज़ीवाला)

भोलू एक सब्ज़ीवाला था। वह दिन-भर जो भी कमाता था उसमें से आधी कमाई बैंक में जमा कर देता था। उसे सिर्फ यह पता था कि बैंक में आप पैसे जमा कर सकते हो और ज़रूरत पड़ने पर निकाल सकते हो। एक दिन सब्ज़ी वाले की मुलाकात वहाँ अपने दोस्त हरिया से हुई।
भोलू ने हरिया से पूछा कि तुम यहाँ किस काम से आये हो?

हरिया ने उसे बताया कि उसने अपने मूलधन से जो खिलौनों की दुकान खोली थी उसमें उसके सारे पैसे डूब गए, इसलिए वो बैंक से कुछ रुपया उधार लेने आया है जिसे वह कपड़ों की
दुकान खोलने में इस्तेमाल करेगा। लेकिन इस उधार के बदले में उसे बैंक को हर महीने कुछ किराया देना पड़ेगा जिसे किश्त कहा जाता है।

भोलू हरिया की बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था। उसने हरिया को बताया कि पिछले महीने उसे ज्यादा मुनाफा हुआ था। उसने हरिया से पूछा, क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे मैं उस मुनाफ़े का बेहतर इस्तेमाल कर सकूं? हरिया ने कहा कि यदि तुम उस मुनाफ़े का फिर से लाभ उठाना चाहते हो उसका पुनर्निवेश करते रहो ताकि इसका तुम्हें ब्याज मिलता रहे। इसके लिए तुम्हें बस बैंक में एक निश्चित समय के लिए अपना एक खाता खोलना होगा व उसमें अपने पैसे पुनर्निवेश करते रहना होगा। बैंक भी हर महीने एक तय रकम तुम्हारे खाते में डालता रहेगा। जिसे लाभांश कहते हैं। उसे तुम कभी भी निकाल सकते हो।

सब्ज़ीवाला यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे यह तरीका बहुत अच्छा लगा क्योंकि यह दोनों तरफ से फ़ायदे का सौदा था। इसमें बैंक को भी नियमित तौर से पैसा मिल रहा था जिसे वह थोड़ा-थोड़ा कर के ब्याज की तरह आपको वापिस दे रहा था। आपका पैसा वहाँ सुरक्षित होने के साथ-साथ बढ़ भी रहा था।

शब्द को उसके अर्थ से मिलाइए

मुनाफे का फिर से निवेष करना	मूलधन
पहला असल धन कहलाता है	पुननिर्विष
किसी काम में पैसे लगाना	जमा करना
बैंक में निश्चित समय के लिए जमा की गई रकम से लाभ मिलाना	किश्त
बैंक से पैसा उधार लेने पर हर महीने खाते से कटने वाला धन	लाभांष
बैंक में अपने खाते में पैसे डालना	निवेष

रुपये में गिरावट

(राजा विक्रम सिहं)

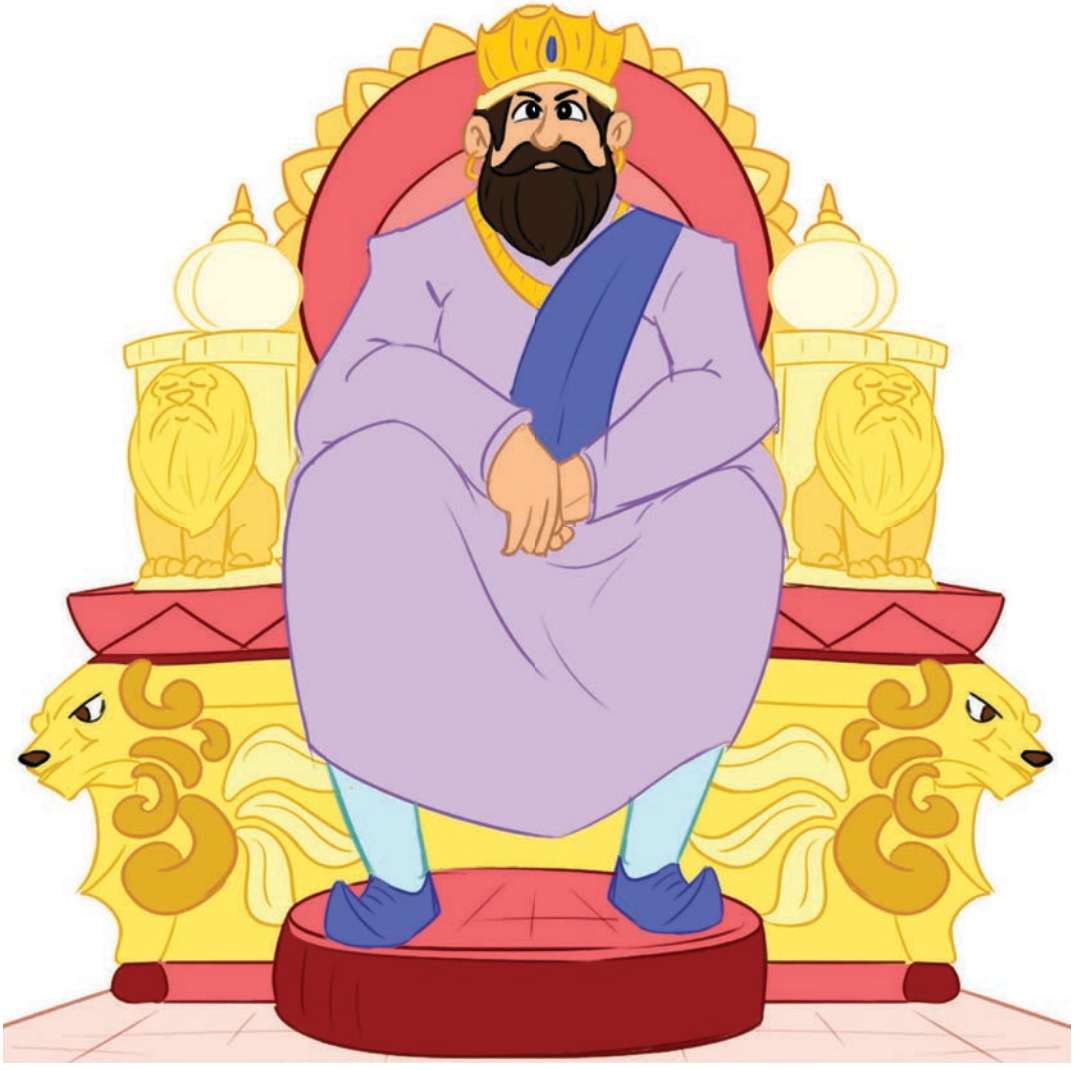

राजा विक्रम सिंह को सुनहरे स्पर्ष का वरदान मिला था। वह जिस किसी भी चीज़ को छूता था वो सोने में बदल जाती थी। अपनी इस शक्ति से उसने, अपना सिंहासन, गाड़ी एवं महल सोने का बना लिया था। वह बहुत ताकतवर राजा बन गया था क्योंकि उसके पास सबसे कीमती चीज़ थी, सोना। इस सोने को सभी राजा-महाराजा पाना चाहते थे।

अनेक राजा हज़ारों की संख्या में उसके पास अलग-अलग प्रस्ताव लेकर आते थे। जैसे कि अच्छे से अच्छा रेशम, कई एकड़ ज़मीन, और ऐसे अमूल्य मसाले जि नके बारे में लोगों ने सुना भी नही था। राजा उन प्रस्तावों को स्वीकार कर लेता था। छोटे से छोटे

आनंद के बदले में सभी को हज़ारों कि लो ग्राम तक का सोना दे दिया करता था। वो ऐसा करे भी क्यों नही, वो कभी भी सोना बना सकता था।

जब कोई भी राजा उसके पास छोटे से छोटा प्रस्ताव, जो सोने की कीमत के बराबर भी नही होता था, उसे लेकर आता था तो राजा विक्रम सिंह उन्हें मान लेता था व उसके बदले में सोना दे देता था। धीरे-धीरे साल गुजरने के साथ उसके पास व्यापारी आना कम हो गये।

पहले उसके पास राजा-महाराजाओं का आना जाना ज्यादा होता था पर अब साधारण लोगों की संख्या राजा महाराजा और रईसों की तुलना में बढ़ गई थी। साधारण लोग उसके पास सोने की मांग करने ज्यादा संख्या में आने लगे। लेकिन बहुत ही कम समय में उन साधारण लोगों का आना भी बदं हो गया। तब राजा विक्रम सिंह को आश्चर्य हुआ कि इतने महीनों से उसके पास कोई भी व्यापार करने नही आ रहा है, क्या अब किसी को भी सोने की ज़रुरत नही है?

इस राज़ का पता लगाने के लिए, राजा भेष बदलकर, शहर का चक्कर लगाने निकला। जब राजा अपने शहर की कई मशहूर गलियों, मकानों से होता हुआ गुज़रा तो उसे यह देखकर विश्वास नही हुआ कि उसके शहर में इतना सोना था कि वह अपने शहर का नाम बदल कर, सोने का शहर रख दे। जहाँ भी वह नज़र डालता वहाँ उसे सोना ही सोना दिखाई देता।

जब वो वापिस आया तब यह सोचकर वो बहुत संतुष्ट एवं खुश था कि उसका शहर खूब तरक्की कर रहा था, साथ ही सभी के पास सोना था। लेकिन वह इस रहस्य का अब तक पता नही लगा पाया कि अब किसी को सोना क्यों नही चाहिए। राजा विक्रम सिंह ने खुद अपने आप से कहा, यह बात अभी भी मुझे समझ नही आ रही। उसने तुरंत अपने पैसों का हिसाब-किताब रखने वाले मंत्री को बुलाया तथा उससे पूछा कि अब किसी को सोना क्यों नही चाहिए?

मंत्री ने कहा, राजा जी! अब लोगों के पास अधिक सोना हो गया है। लोगों को अब अलग-अलग चीज़ों की ज़रूरत है। हर जगह इतना सोना हो गया है कि वह अब कीमती नहीं रहा। अब उनके लिए वो बेकार हो गया है। अब सोना सबके पास है इसलिए कोई भी उसका लेन-देन नहीं करना चाहता। सोने के बदले में लोग रेशम जैसी कीमती व अमूल्य चीज़ों को खरीदना चाहते हैं।

इस कहानी से हमने यह सीखा कि किसी भी चीज़ की कीमत कब तक है, जब तक वह कम है।

अगर दुनिया में वो ज़रूरत से बहुत ज्यादा हो जायेगी तो फिर लोग उसे नहीं खरीदना चाहेंगे जिसके कारण उसकी कीमत कम हो जायेगी। इस स्थिति को गिरावट कहते हैं।

रूपये में गिरावट

द	म	की	म	ती	ल	व	श	गि
य	क	आ	त	ग	म	न	ग	रा
अ	धि	क	ल्य	मं	त्री	आ	क	व
त्व	अ	न	अ	मा	री	अ	ष	ट
म	च	ग	ल	स	बे	र	वि	अ
क	सो	क	ग	धि	का	ग	क्र	अ
अ	ना	म	अ	म	र	द	म	मू
ल	पा	न्य	ल	ल	आ	हा	प	ल्य
ह	ख	ई	ग	को	की	म	त	स

1. मंत्री
2. कीमती
3. अमूल्य
4. बेकार
5. विक्रम
6. गिरावट
7. कीमत
8. अधिक
9. सोना
10. अलग-अलग

कर्ज़ का सबक

एक समय की बात है, गोरी नाम की एक लड़की अपनी सौतेली माँ व अपनी सौतेली बहनों के साथ रहती थी। वे सब उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी। उससे दिन भर काम करवाती थी, लेकिन खुद आराम करती रहती थी।

गोरी अपने नाम के जैसी ही दूध सी गोरी थी, वह इतनी सुन्दर थी कि एक बार जो उसे देख लेता था बस देखता ही रह जाता था। उसकी सौतेली माँ और बहनें उसकी सदुंरता से जलती थी। उन्हें उससे नफरत थी।

उसके परिवार वालों ने उसे अपने से अलग कर दिया था यदि उसके साथ एक बूढ़ी औरत नही होती तो वह बिलकुल अकेली हो जाती। उस बूढ़ी औरत ने उसकी मुश्किल समय में मदद की, उसका ध्यान रखा, बल्कि उसे वो प्यार दिया जो उसे अपने परिवार से नही मिला था। वह बूढ़ी औरत ही उसका सच्चा परिवार था।

एक दिन गोरी के घर के बाहर एक परचा लगा था जिसमें लिखा था कि सारी कुंवारी लड़कियों को निमत्रंण दिया जाता है कि वो राजमहल में आएं, जहाँ राजकुमार उनका स्वागत करेंगे। इसमें सभी का आना ज़रूरी है। उन सभी लड़कियों में से एक खुशकिस्मत, सबसे सुन्दर लड़की राजकुमार की पत्नी बनेगी। गोरी की सौतेली माँ ने सोचा कि यह तो उसकी बेटियों के लिए बहुत बढ़िया मौका है। लेकिन बदकिस्मती से गोरी भी वहाँ जाएगी।

गोरी के पास अच्छे कपड़े नही थे, उसके पास उन लोगों के पहने हुए पुराने कपड़े ही थे। उसे वही फटे-पुराने कपड़े पहनने पड़े। उसने अपनी सौतेली माँ से नए कपड़े नही माँगे क्योंकि वह जानती थी कि वो कभी नही देंगी। गोरी के पास इतने पैसे भी नही थे कि अपने लिए नया लहंगा खरीद सके। उसे पता था कि वह सुन्दर तो है पर उसके पास पहनने के लिए ढंग के कपड़े नही हैं।

गोरी ने उस बूढ़ी औरत से मदद मांगने का फैसला किया। उसने बूढ़ी औरत से कहा कि वह उसका यह एहसान कभी नही भूलेगी और यह वादा किया कि रानी बनने के बाद उसकी सहायता करेगी। बूढ़ी औरत ने रात भर जाग कर काम किया व उसके लिए एक सुन्दर सा लहंगा तैयार कर दिया। अगले दिन वे सब महल जाने के लिए निकल पड़े। गोरी भी एक राजकुमारी की तरह सज गई।

हम पहुँच गए!, सौतेली माँ ज़ोर से बोली, जैसे ही उसने बाहर का नज़ारा देखा वो एक पल के लिए पीछे हट गई, उसे अपनी आँखों पर विश्वास नही हुआ। उसने एक गहरी सांस ली, वो महल की खूबसूरती देखकर हैरान हो गई। महल जितना विशाल था, उतना ही सुन्दर भी था।

उसकी 5 विशाल सफ़ेद मीनारें इतनी ऊँची थी कि ऐसा लग रहा था जैसे मीनारें ऊपर से नीचे पूरे शहर का नज़ारा देख रही हों। सही तरीके से तराशी हुई संगमरमर की आलिशान स्लेटी रंग की दीवार उन मीनारों से जुड़ी हुई थी। अंदर जाने का घुमावदार रास्ता लगभग 5 किलोमीटर तक लम्बा था जिसके दोनों तरफ पहरेदारी करते हुए दो सैनिक खड़े थे जो चांदी के रंग का लोहे का कवच पहने थे। वह कवच इतना ज्यादा चमक रहा था कि उसमें आप खुद का चेहरा देख सकते थे।

'चर्र!' दरवाज़े के खुलते ही वे सब महल का अंदर चली गई। वहाँ 50 मीटर लम्बा बरामदा था जिसके दोनों तरफ कुर्सियाँ लगी थी। उसके सामने ऊपर की ओर 24 कैरेट सोने का बना सिंहासन था जिसमें पन्ना एवं हर तरह के रत्न लगे हुए थे।

तभी राजा बोले,

आप सब यहाँ एक उम्मीदवार की तरह हमारे राजकुमार के लिए इकट्ठा हुई है, जो भी राजकुमार को सबसे अच्छी लगेगी वही रानी बनेगी।

सैंकड़ों महिलाएँ दिनभर राजा के महल में आती रही, जल्द ही अब गोरी की बारी आई।

सैंकड़ों महिलाएँ दिनभर राजा के महल में आती रही, जल्द ही अब गोरी की बारी आई।

राजकुमार को नमस्कार! मेरा नाम गोरी है। यह कहकर उसने झुककर सलाम किया। उसे देखते ही राजकुमार की आँखें फटी की फटी रह गई, साथ ही मुँह खुला का खुला रह गया। राजकुमार को गोरी इतनी सुन्दर लगी कि उसने उसे अपनी रानी बनाने का फैसला कर लिया। सौतेली माँ बहुत गुस्सा हो गई थी क्योंकि उसकी बेटियों को राजकुमार ने एक मौका भी नहीं दिया लेकिन उसने अपना गुस्सा नहीं दिखाया।

आखिरकार अब गोरी एक रानी बन चुकी थी! एक रानी जिसका पूरे षहर पर राज था। सारी षानो-षौकत व समाज के अमीर लोगों के साथ उठने-बैठने की सोचकर वह खुषी से फूली नही समां रही थी। इसके जोष में वह घमंडी हो गई और महल चली गई।

जब वह महल में आराम से रहने लगी, तब एक दिन उसको बधाई देने वह बूढ़ी औरत आई, लेकिन उसने उसे अपने से दूर कर महल से जाने को कहा। वह अब उसके साथ कोई रिष्ता नही रखना चाहती थी क्योंकि अब वह एक रानी थी, उसका घमंड सिर चढ़कर बोल रहा था।

गोरी ने उस बूढ़ी औरत को एक पल का समय भी नही दिया, ना ही उसकी मदद करने का अपना वादा पूरा कि या। हफ़्ते बीत गए पर वो उससे मिलने आती रही परन्तु गोरी उसे भगाती रही।

अंत में उस बूढ़ी औरत को एहसास हुआ कि गोरी इसी तरह मुझे दुत्कारती रहेगी, तब गुस्से में आकर वह महल गई और चिल्लाते हुए उसे श्राप देते हुए बोली, राजकुमार अब तुझे भूल जायेगा और तू फिर से रानी से नौकरानी बन जाएगी!।

फिर ऐसा ही हुआ।

इस कहानी से हमने यह सीखा कि हम जब भी कर्ज़ या किसी भी व्यक्ति से उधार लें तो उसे ज़रूर लौटाएँ। अगर आप ऐसा नही करतें है तो तब आपको इसके बहुत बुरे परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं, इसलिए ज़रूरी कामों के लिए ही पैसे उधार लें तथा समझदारी से उसका इस्तेमाल करें एवं समय पर भुगतान मतलब वापस करें।

कर्ज का सबक

द	म	ले	ना	ती	ल	व	श	गि
य	क	आ	त	ग	म	न	ग	रा
दे	धि	क	ल्य	मं	त्री	आ	क	व
ना	अ	न	अ	मा	री	अ	र्ज़	ट
म	च	ग	ल	स	बे	र	वि	अ
भु	ग	ता	न	धि	का	ग	क	उ
अ	ना	म	अ	म	र	द	म	धा
ल	पा	न्य	ल	ल	आ	हा	प	र
लौ	टा	ए	ग	को	की	म	त	स

1. लेना
2. देना
3. कर्ज़
4. उधार
5. भुगतान
6. लौटाए

संपत्ति को विभिन्नता से बाँटना

(मोहन और गोपाल)

मोहन ने अपनी सारी बर्फ़ी एक डिब्बे में रखी और अलमारी में छिपा दी। वह सोच रहा था कि यह जगह बिलकुल सही है व उसकी बर्फ़ी वहाँ सुरक्षित है। रामू, श्यामू, और मीनू, कोई भी बर्फ़ी को ढूंढने वहाँ नही आएगा। क्या ऐसा ही होगा या नही?

एक दिन सब कमरे में खेल रहे थे, मोहन ने तभी ज़ोर से कुछ गिरने की आवाज़ सुनी। उसने सोचा शायद ये बर्तनों के गिरने की आवाज़ें है और इस बात पर ज्यादा ध्यान नही दिया। रात में चुपचाप वह ज़रा सी बर्फ़ी लेने गया। वह मन ही मन सोच रहा था कि चलो इतनी देर हो गई है, ज़रा सी बर्फ़ी खा लेता हूँ। ये क्या! कहाँ है मेरी बर्फ़ी ? डिब्बा कहाँ चला गया? मोहन को बहुत चिंता होने लगी कि उसकी बर्फ़ी के साथ क्या हुआ?

न चाहते हुए भी मोहन ने हिम्मत दिखाई, अलमारी के पीछे उसे अपना डिब्बा दिखाई दिया, वह ज़ोर से चिल्लाया,

अरे! यह क्या हुआ! डिब्बा तो पूरा खाली है। इसे कौन खा गया, मुझे गोपाल को जाकर बताना ही पड़ेगा। मोहन जल्दी से भागकर गोपाल के पास गया, उसे बताया कि हमारी सारी बर्फ़ी गायब हो गई।

वह सोच रहा था की यह सुनकर गोपाल दुखी हो जायेगा, लेकिन गोपाल के चेहरे पर कोई भाव ही नही था। उसने मोहन से कहा, सिर्फ तुम्हारी बर्फ़ी , मेरी नही।

गोपाल की बर्फ़ी कैसे अब तक उसके पास है? गोपाल ने मोहन से कहा, चलो मेरे पीछे आओ। मोहन ने वैसा ही किया।

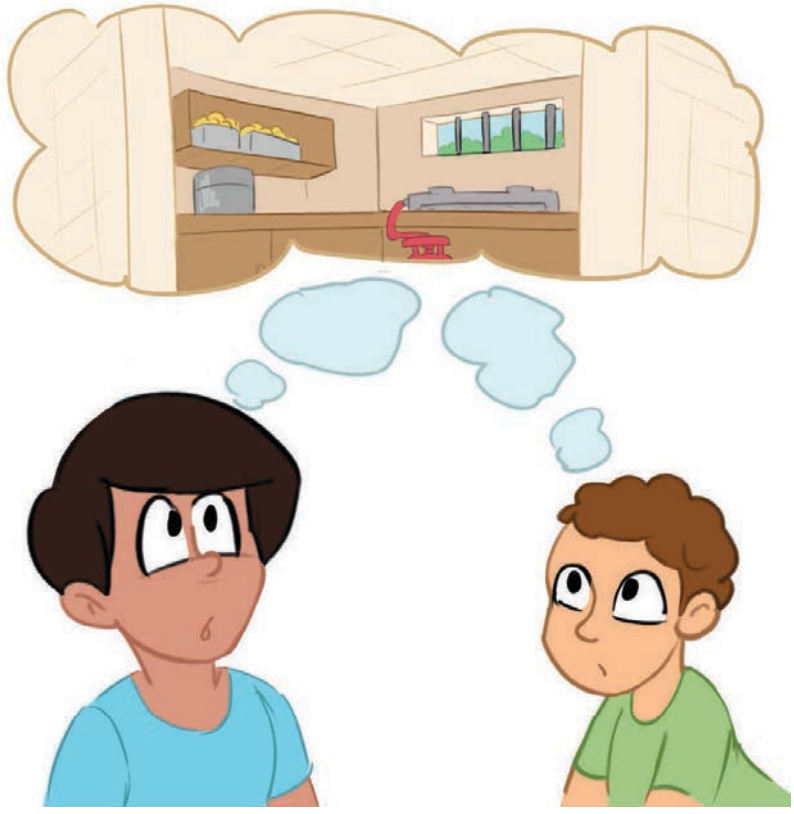

उन पर्दों के पीछे क्या है? वाह! बर्फ़ी ?

लेकिन कैसे? मोहन ने गोपाल से पूछा। गोपाल ने मोहन को बताया,

मैंने अपनी सारी बर्फ़ी सिर्फ एक ही जगह नही रखी थी बल्कि उसे

10 अलग-अलग जगहों पर, पूरे घर में छिपाया था।

इसलिए तुम्हारी जो बर्फ़ी गायब हो गई, उसमें मेरी बर्फ़ी का सिर्फ 10 हिस्सा ही था।

क्या! तुम्हारे कहने का मतलब क्या है? मोहन बोला।

गोपाल ने मोहन को समझाया कि उसने अपनी बर्फ़ी छिपाने के लिए

अलग-अलग जगह चुनी, सिर्फ एक जगह ही नही।

इस कहानी से हमने यह सीखा कि हमें अपना सब कुछ दाँव पर नही लगाना चाहिए।

कहने का मतलब यह है कि आपको अपना सारा पैसा एक जगह न लगाकर,

थोड़ा-थोड़ा कई जगह लगाना चाहिए। ताकि नुकसान होने पर भी

आपको ज्यादा पछतावा न हो। इससे आपका दूसरी जगहों पर लगाया गया

धन तो कम से कम सुरक्षित रहेगा।

आप उसका फिर अन्य जगहों पर निवेश कर सकते हैं। बेशक, कम पैसा लगाने के कारण आपका मुनाफा थोड़ा कम होगा, परन्तु उसमें जोखिम भी कम होगा। आप लगातार इस तरह लाभ उठाते रह सकते हैं।

प्रश्न को उसके उत्तर से मिलाइये

मोहन ने अपनी बर्फी कैसे गवां दी ?	उसने कई जगह निवेष किया
गोपाल ने अपनी बर्फी क्यों नही गवाई ?	लगातार लाभ होता रहता है
संपत्ति को विभिन्नता के बाँटने का एक फायदा क्या है ?	पुरे हिस्से का नुकसान होना
संपत्ति को विभिन्नता के बाँटने का एक और फायदा क्या है ?	नुकसान होने का खतरा कम होता है
डिब्बे का गायब होना क्या बताता है ?	उसने अपनी संपत्ति को विभिन्नता से नही बाँटा

उत्तर कुंजी

1. बजट की आदत

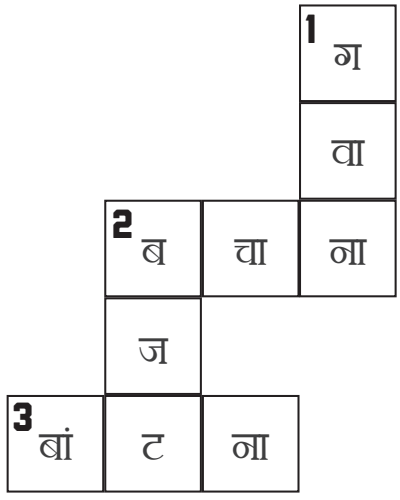

बाएं से दाएं

2. बचाना

3. बांटना

ऊपर से निचे

1. गवाना

2. बजट

2. चक्रवृद्धि का कमाल

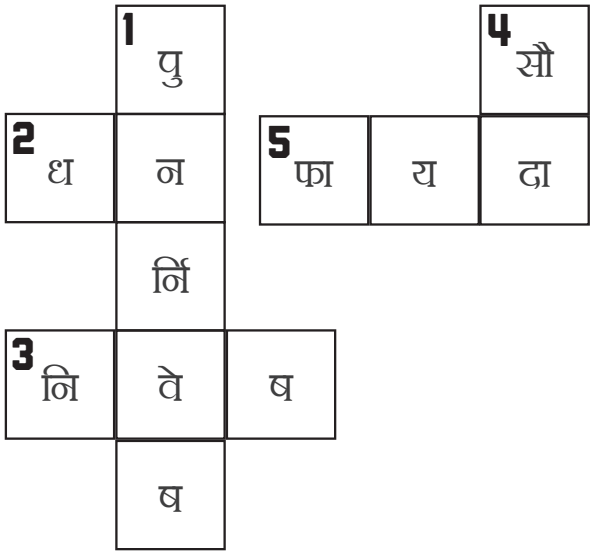

दाएं से बाएं

2. धन

3. निवेष

5. फायदा

ऊपर से निचे

1. पुनर्निवेष

4. सौदा

3. बैंक की सेवाए

मूलधन - पहला असल धन कहलाता है

पुननिविष - मुनाफे का फिर से निवेष करना

निवेष - किसी काम में पैसे लगाना

लाभांष - बैंक में निश्चित समय के लिए जमा की गई रकम से लाभ मिलाना

किश्त - बैंक से पैसा उधार लेने पर हर महीने खाते से कटने वाला धन

जमा करना - बैंक में अपने खाते में पैसे डालना

4. रुपये में गिरावट

द	म	की	म	ती	ल	व	श	गि
य	क	आ	त	ग	म	न	ग	रा
अ	धि	क	ल्य	मं	त्री	आ	क	व
त्व	अ	न	अ	मा	री	अ	ष	ट
म	च	ग	ल	स	बे	र	वि	अ
क	सो	क	ग	धि	का	ग	क्र	अ
अ	ना	म	अ	म	र	द	म	मू
ल	पा	न्य	ल	ल	आ	हा	प	ल्य
ह	ख	ई	ग	को	की	म	त	स

1. मंत्री
2. कीमती
3. अमूल्य
4. बेकार
5. विक्रम
6. गिरावट
7. कीमत
8. अधिक
9. सोना
10. अलग-अलग

5. कर्ज का सबक

द	म	ले	ना	ती	ल	व	श	गि
य	क	आ	त	ग	म	न	ग	रा
दे	धि	क	ल्य	मं	त्री	आ	क	व
ना	अ	न	अ	मा	री	अ	र्ज़	ट
म	च	ग	ल	स	बे	र	वि	अ
भु	ग	ता	न	धि	का	ग	क	उ
अ	ना	म	अ	म	र	द	म	धा
ल	पा	न्य	ल	ल	आ	हा	प	र
लौ	टा	ए	ग	को	की	म	त	स

1. लेना
2. देना
3. कर्ज़
4. उधार
5. भुगतान
6. लौटाए

6. संपत्ति को विभिन्नता से बाँटना

मोहन ने अपनी बर्फी कैसे गवां दी ?

- उसने अपनी संपत्ति को विभिन्नता से नही बाँटा

गोपाल ने अपनी बर्फी क्यों नही गवाई ?

- उसने कई जगह निवेष किया

संपत्ति को विभिन्नता के बाँटने का एक फायदा क्या है ?

- नुकसान होने का खतरा कम होता है

संपत्ति को विभिन्नता के बाँटने का एक और फायदा क्या है ?

- लगातार लाभ होता रहता है

डिब्बे का गायब होना क्या बताता है ?

- पुरे हिस्से का नुकसान होना

एक प्रयास

कहते हैं 'पैसा कमाना मुश्किल है और उसे गँवाना आसान'. खास तौर पर जब बात हो ग्रामीण भारत की, तो ये बात और भी पुख्ता हो जाती है. गाँवों में लोग कड़ी मेहनत से पैसा कमाते हैं और वे धोखाधड़ी वाली योजनाओं, लॉटरी या इनामों का लालच देने वाले लोगों और कंपनियों का आसानी से निशाना बन जाते हैं. इसके कारण वे किसी भी तरह का निवेश करने में सशंकित और भयभीत रहते हैं. इससे आखिरकार यही होता है कि पैसा कमाया जाता है और पैसा खर्च भी किया जाता है, लेकिन पैसा बढ़ नहीं पाता.

''एक प्रयास'' शौर्य काबरा की एक पहल है, जो एक ऐसे ग्रामीण भारत के निर्माण का प्रयास है, जो आर्थिक रूप से भलीभाँति साक्षर हो. इसके अंतर्गत विभिन्न वित्तीय अवधारणाओं जैसे बजट, निवेश, बचत, ऋण, सावधि जमा आदि को किताबों और एनीमेशन के माध्यम से सरल और आसानी से समझने योग्य तरीकों से समझाया जाता है. उन्हें यह भी सिखाया जाता है कि वे आर्थिक झटकों से कैसे उबर सकते हैं और बिना किसी परेशानी या कशमकश के अपने आपातकालीन खर्चों का प्रबंधन कैसे कर सकते हैं.

''एक प्रयास'' प्रत्येक ग्रामीण भारतीय को धन के संबंध में समझदार बनने में मदद करने और यह सिखाने का एक प्रयास है, कि वे अपने अमूल्य धन की बचत कैसे कर सकते हैं और कैसे इसे बढ़ाकर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं.

आपने एक रूपया बचाया है,
यानी एक तरह से आपने एक
और रूपया कमा लिया।

NOT FOR SALE

नि:शुल्क वितरण हेतु

लेखक: शौर्य काबरा

www.ekprayaas.co.in